भजन

हम तो पहले ही यूं मजे में थे,
यह माया किस लिए मांग ली
हमें दर्दो गम का पता न था,
ये जुदाई किस लिए मांग ली

1–तेरे इश्क की मस्ती में मस्त,
रहते थे हम शामो सहर
तेरी नजरों में हम कैद थे,
रिहाई किस लिए मांग ली

2–कभी जमुना जी में झीलना,
कभी सैर की सुखपाल में
थी बहारें तेरे कदम तले,
ये खिजायें किस लिए मांग ली

3– जितने रूहों के तन पिया,
उतने ही तेरे रंग वहां
सुख लेते थे पिया आपका,
ये तन्हाई किस लिए मांग ली